दृष्टि The Vision

# हिन्दी साहित्य

# HINDI LITERATURE

## टेस्ट-VIII ( प्रश्नपत्र-2 )

DTVF/19(N-M)–HL-**HL8**

निर्धारित समय: तीन घंटे
*Time allowed: Three Hours*

अधिकतम अंक: 250
*Maximum Marks: 250*

नाम (Name): ANKIT MISHRA

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | | नहीं | ✓ |

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): VIII / 15/03/2019

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]: ____________

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ankit

---

## Question Paper Specific Instructions

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

---

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

---

मूल्यांकनकर्त्ता ( कोड तथा हस्ताक्षर )
*Evaluator (Code & Signatures)*

पुनरीक्षणकर्त्ता ( कोड तथा हस्ताक्षर )
*Reviewer (Code & Signatures)*

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

## Section–A

1. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: 10 × 5 = 50

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखें। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दुःख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

संदर्भ-प्रसंग :- उपरोक्त गद्यांश प्रेमचंद के गोदान उपन्यास से उद्धृत है। यहाँ मालती, मि. मेहता के प्रणय निवेदन का जवाब दे रही हैं।

व्याख्या

रचनात्मक सौंदर्य

~~(1) पूंजी आधारित व्यवस्था का अच्छा उदाहरण। किस प्रकार धन की उपस्थिति~~



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी करती है, इसकी झलक

(2) एक वृद्ध के अनुभव और ~~कृपा~~ के प्रेम के वशीभूत युवा की भावनाओं और उनके निर्णय क्षमता के बीच के अंतर का सुंदर नमूना



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) स्त्री जीवन की पूर्ति नहीं, जीवन की पूर्ति का एक उपकरण और साधन मात्र है। सामर्थ्यवान, सफल मनुष्य अनेक स्त्रियाँ प्राप्त कर सकता है, परन्तु सफलता के अवसर जीवन में अनेक नहीं आते। पुत्र, संसार में बल ही प्रधान है; धन-बल और जन-बल। तुम मद्रगण के राजा गणपति की कृपा की उपेक्षा कर वृद्ध देवशर्मा की कृपा पर निर्भर रहना चाहते हो? पुत्र, तुम नीतिवान हो, विचार करो, यवन गणपति की पौत्री से विवाह कर तुम अनायास, बिना किसी विरोध के महाकुलीन सामन्त बन जाओगे, परन्तु देव शर्मा की प्रपौत्री से विवाह की इच्छा करने पर, उदार देव शर्मा के आपत्ति न करने पर भी, सम्पूर्ण द्विज समाज को अपना शत्रु बना लोगे। द्विजवर्ग की सत्ता, इतर जन की हीनता और इतर जन से सेवा प्राप्त करने के अधिकार पर आश्रित है। इतर जन को अपने समान बना लेने पर उनका विशेष अधिकार क्या रह जायगा? इतर जन का सशक्त होना उन्हें स्वीकार नहीं, परन्तु समर्थ की सत्ता वे भी अस्वीकार नहीं कर सकते। हम किसी को शत्रु क्यों बनायें? पुत्र, हमें शत्रुओं की नहीं, मित्रों और सहायकों की आवश्यकता है।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त गद्यांश मार्क्सवादी लेखन के पितामह 'भशपाल' के 'दिव्या' नामक उपन्यास से उद्धृत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहाँ नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त गद्यांश 'अज्ञेय' के 'संवत्सर' नामक निबंध से उद्धृत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त गद्यांश 'आ० शुक्ल' के 'श्रद्धा-भक्ति' नामक निबंध से उद्धृत है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) "'गोदान' अपने समय के ही नहीं, भविष्य के भारत की भी तस्वीर है।' इस कथन की परीक्षा कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1936 में रचित 'गोदान' तत्कालीन देश और समाज के लगभग हर पहलू को समेटता है, और उसी अनुपात में समेटता है जितना कि वो उस समय था।

ग्रामीण कथा से लेकर शहरी कथा तक, जमींदार वर्ग, पूँजीपति वर्ग, किसान और मजदूर वर्ग, तत्कालीन महिला और उनके मुद्दे आदि को 'गोदान' अत्यंत कुशलता पूर्वक उठाता है।

परंतु गोदान सिर्फ 1936 के आस-पास के कालखण्ड को ही नहीं समेटता है। वह कुछ ऐसे समस्याओं और परिस्थितियों पर भी प्रकाश डालता है जो बाद के समय में अधिक स्पष्ट हुए तथा आज के समय में तो विशेष रूप से प्रासंगिक हैं।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान के दो मुख्य पात्र - होरी और गोबर, के बीच पिता-पुत्र का संबंध है तथा यह पीढ़ी अंतराल का सूचक है। इन दोनो पात्रों के बीच बैचारिक स्तर पर बहुत अधिक भिन्नता है। यदि आज के संदर्भों में परिक्षण करें तो पीढ़ी अंतराल, पहले की तुलना में कहीं अधिक उपलब्ध होता है। गोदान में प्रेमचंद इस बात को 1936 में ही सूचित कर रहे थे।

'किसानी में मरजाद है', होरी इस विचार के साथ जीता है तो गोबर मजदूरी और व्यवसाय को अधिक लाभप्रद मानता है। उसे 'मरजाद' (मर्यादा) की कोई विशेष चिंता नहीं है।

गोबर शहर में जाकर 'ठेला' लगाकर पैसे कमाता है और पैसे कमाने के बाद उसे सूद पर लोगों को देता है। यह बात जितनी तब प्रासंगिक थी, उससे भी ज्यादा आज है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

गोदान में अनेक पात्रों के माध्यम से 'प्रेम-विवाह' की परिकल्पना प्रेमचंद ने कई समस्याओं के समाधान के रूप में की है। अपने रचनाकाल के आठ दशकों बाद, आज देश में ऐसी स्थिति है जहाँ 'प्रेम-विवाह' को उस तरह हेय नहीं माना जाता है जैसा शायद उस समय में था।

गोदान में 'पूंजीपति' वर्ग के उत्थान पर भी एक झलकी मिलती है। सिर्फ 'स्पेकुलेशन' के माध्यम से लाखों का 'वारा-न्यारा' करने वालों की उपस्थिति आज का भी सच है।

तत्कालीन महिलाओं की स्थिति तथा मालती आदि के माध्यम से नवोदित महिला-आंदोलनों की झलक गोदान में मिलती है। यह आंदोलन बाद के भारत में और अधिक सघन हुए हैं।

जमींदार साहब का होरी


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से यह कहना की 'हमारे दिन भी अब गिने-चुने बचे है,' - इस बात का सूचक है कि जमींदारी प्रथा का सूरज ढलने वाला है। स्वतंत्रता के बाद जमींदारी प्रथा सैद्धांतिक रूप से समाप्त कर दी गई।

कुछ प्रसंगों में यह संकेत भी मिलते हैं, जहाँ वर्तमान पीढ़ी के 'सवर्ण' युवा सामाजिक ~~[crossed out]~~ समता स्थापित करने के लिए अपनी पुरानी पीढ़ी से विद्रोह करने के लिए भी तत्पर हैं। 'सिलिया' के लिए पण्डित के लड़के का अपने पिता से विद्रोह इसी बात का सूचक है। कुछ ऐसी ही स्थिति आज भी बहुतायत में देखी जा सकती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि गोदान अपने समय के ही नहीं, भविष्य के भारत की भी तस्वीर है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) रामचंद्र शुक्ल के निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' के प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालिए। 15

आ॰ शुक्ल एक गंभीर चिंतनशील व्यक्ति हैं, जो कि सिर्फ कुछ शब्दों को लेकर उनके भीतर छिपे भावों की परत-दर-परत खोलते हैं।

'श्रद्धा-भक्ति' भी ऐसा ही एक उदाहरण है।

'श्रद्धा' इस शब्द की आरम्भ से शुरुआत करते हुए अनेक उदाहरणों के माध्यम से आ॰ शुक्ल इसे स्पष्ट करते हैं। श्रद्धा किसी के प्रति सामान्य तौर पर भी हो सकती है, जैसे एक शिष्य का एक शिक्षक के प्रति श्रद्धा। एक सामान्य नागरिक का एक सैनिक के प्रति श्रद्धा आदि।

आ॰ शुक्ल स्पष्ट करते हैं कि समाज के सुसंचालन और सुव्यवस्था के लिए 'श्रद्धा' जैसे मनोभावों का होना अति आवश्यक है। यदि


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लोगों में यह भाव नहीं होगा तो समाज के लिए अच्छा काम करने की प्रेरणा लोगों को नहीं मिलेगी, और किसी भी सभ्य समाज के लिए यह अच्छी स्थिति नहीं है।

इसके उपरांत आ० शुक्ल अगले स्तर पर आते हैं और स्पष्ट करते हैं कि भक्ति श्रद्धा का ही अगला चरण है। श्रद्धा जब असीम श्रद्धा में बदल जाए तो वह भक्ति के अति निकट पहुँच जाती है।

श्रद्धा और भक्ति में एक विशेष अंतर यह है कि श्रद्धालु एक सामान्य स्थिति में ही रहता है परंतु ~~भक्ति~~ भक्त स्वयं एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ वह स्वयं भी पूजनीय हो जाता है। उदाहरण स्वरूप - राम कि भक्ति करते-२ स्वयं हनुमान भी पूजनीय हो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गए।

संपूर्ण निबंध में इसी तरह के गंभीर चिंतन के माध्यम से आ. शुक्ल ने समाज के लिए 'श्रद्धा-और भक्ति' जैसे उदात्त भावों को ~~पोषित~~ पोषित करने की वकालत की है।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की वर्तमान उपादेयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन' ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित वर्तमान समस्याओं को प्रतिबिंबित करने वाला नाटक है।

कालिदास के व्यक्तित्व के माध्यम से एक ऐसे व्यक्ति का चित्रण किया है जो अपने जीवन को लेकर दिग्भ्रमित है — उसे यह नहीं पता है कि वह क्या करना चाहता है और क्यों करना चाहता है। आज के मानव कि भी कमोवेश यही स्थिति होती है, जहाँ उसे यही नहीं पता होता है कि वह करना क्या चाहता है।

कालिदास एक उच्च कोटि का कवि है तथा उसका प्रयोग करके वह अर्थोपार्जन कर सकता है पर उसके लिए उसे उज्जैन के राजभवन में


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जाना पड़ेगा। कालिदास अपने निवास स्थान को छोड़कर वहाँ नहीं जाना चाहता। यह स्थिति कुछ आज के युवाओं की भी लगती है, जहाँ वो अपने 'कम्फर्ट जोन' से बाहर नहीं निकलना चाहते हैं।

प्रेम में स्त्री पक्ष के तरफ से समर्पण और बलिदान की बात हो या धनाढ्य लोगों द्वारा हर चीज को पैसे से खरीदने की चाहत - यह आज भी प्रासंगिक है। राजकुमारी द्वारा ग्रामीण परिवेश को राजमहल में स्थापित करने के प्रयास में कुछ पेड़-पौधे तथा जानवर आदि का उज्जैन ले जाना इसी बात का द्योतक है।

अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक आज भी प्रासंगिक है तथा इसकी आवश्यकता पहले से भी बढ़ी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हमने एक दूसरा उपाय सोचा है, एडूकेशन की एक सेना बनाई जाय। कमेटी की फौज। अखबारों के शस्त्र और स्पीचों के गोले मारे जायँ। आप लोग क्या कहते हैं?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त गद्यांश भारतेंदु हरिश्चंद्र के भारत-दुर्दशा नाटक से उद्धृत है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) प्रच्छन्नता का उद्घाटन कवि-कर्म का एक मुख्य अंग है। ज्यों-ज्यों सभ्यता बढ़ती जाएगी त्यों-त्यों कवियों के लिये यह काम बढ़ता जाएगा। मनुष्य के हृदय की वृत्तियों से सीधा संबंध रखने वाले रूपों और व्यापारों को प्रत्यक्ष करने के लिये उसे बहुत से पदों से हटाना पड़ेगा। इससे यह स्पष्ट है कि ज्यों-ज्यों हमारी वृत्तियों पर सभ्यता के नए-नए आवरण चढ़ते जाएंगे त्यों-त्यों एक ओर तो कविता की आवश्यकता बढ़ती जाएगी, दूसरी ओर कविकर्म कठिन होता जाएगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त गद्यांश आ० शुक्ल के 'कविता क्या है?' नामक निबंध से उद्धृत है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नील कमल की तरह कोमल और आर्द्र, वायु की तरह हल्का और स्वप्न की तरह चित्रमय! मैं चाहती थी उसे अपने में भर लूँ और आँखें मूँद लूँ। ...मेरा तो शरीर भी निचुड़ रहा है माँ! कितना पानी इन वस्त्रों ने पिया है!ओह!

शीत की चुभन के बाद उष्णता का यह स्पर्श!

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त गद्यांश मोहन राकेश कृत 'आषाढ़ का एक दिन' नामक नाक से उद्धृत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ-प्रसंग → उपरोक्त गद्यांश 'जयशंकर प्रसाद' कृत 'स्कंदगुप्त' नामक नाटक से उद्धृत है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) दिव्या उपन्यास में 'दिव्या' के चरित्र पर प्रकाश डालिए। 20

दिव्या उपन्यास में 'दिव्या' एक परिवर्तनशील चरित्र है जो कि अपने शुरुआती प्रसंगों और अंत के प्रसंगों में बिल्कुल भिन्न नजर आती है। प्रारंभ कि 'दिव्या' और अंत की 'दिव्या' में आमूल-चूल परिवर्तन आ चुका होता है। यदि प्रारंभ में 'दिव्या' उत्तरी ध्रुव है तो अंत में दक्षिणी ध्रुव।

प्रारंभिक दिव्या एक संभ्रांत परिवार में जन्मी और पली कन्या है जिसका जीवन की कठिनाई और कड़वी सच्चाई से कोई वास्ता नहीं है। वह मधुर कल्पनाओं में खोई रहने वाली, हृदय में प्रेम पालने वाली तथा कलाओं में रुचि रखने वाली बालिका है।

परंतु, दिव्या कालचूक्र में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

दिव्या के जीवन में ऐसी स्थितियाँ उत्पन्न ~~~~ हैं करती हैं कि संभ्रांत परिवार की बालिका वेश्यालय तक पहुँच जाती है।

प्रेम की सफलता और असफलता के बीच गोते खाते हुए दिव्या जीवन के कटु अनुभवों से परिचित होती है। ऐसी बालिका जिसके घर में ~~~~ सेवकों-सेवि-काओं का तांता लगा रहता हो वह बाद में स्वयं दासी का जीवन व्यतीत करने के लिए अभिशप्त हो जाती है।

हृदय में प्रेम की मधुर कपोलों को पालने वाली दिव्या बाद में इतनी ~~~~ असहाय हो जाती है कि अपने बालक को खुद से अलग किए जाने पर भी कुछ नहीं कर पाती।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संभ्रात परिवार कि दिव्या, जिसके समक्ष लोग आँखें झुकाया करते थे, तथा युवक जिसके समक्ष प्रणय-निवेदन किया करते थे, वह इतनी असहाय है कि मार्ग में चलता हुआ एक सामान्य सैनिक भी उससे अश्लीलता पर उतर दे जाता है।

मारिश के संपर्क में आने पर दिव्या को एक अलग दुनिया कि अनुभूति होती है तथा उसे नारी को प्रकृति द्वारा सौंपे गए कर्तव्यों का बोध होता है, उसे यह बोध होता है कि नारी वस्तु नहीं, व्यक्ति है; उसका स्वयं का एक ~~स्वतंत्र~~ व्यक्तित्व है।

उपन्यास के पूर्वार्द्ध से उत्तरार्द्ध तक आते-2 दिव्या



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पूरी तरह से बदल चुकी होती है। वह अब अधिक परिपक्व, दुनिया की वास्तविकताओं से अधिक परिचित, मानसिक तौर पर अधिक मजबूत और अपने निर्णय भावनाओं के बजाए तर्कों पर लेने वाली एक सक्षम युवती होती है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रंगमंचीयता के धरातल पर 'भारत-दुर्दशा' और 'स्कंदगुप्त' की तुलना कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'भारत-दुर्दिशा' और 'स्कंदगुप्त' दो उस समय के नाटक हैं जब भारतीय नाट्य परंपरा अपना एक स्वतंत्र रंगमंच तलाश कर रही थी।

इस प्रक्रिया में दोनो ही नाटकों में अलग-परंपराओं के कुछ तत्व अलग-2 अनुपात में विद्यमान हैं, तो दोनो में कुछ मौलिकता भी है। रंगमंचीयता भी ऐसा ही एक तत्व है जिसमें इन दोनों में काफी भिन्नता है।

रंगमंचीयता की दृष्टि से 'भारत-दुर्दिशा' स्कंदगुप्त की तुलना में अधिक सरल है। भारत दुर्दिशा में दृश्य खण्ड हैं जिनका मंचन कठिन नहीं है। इसमें कुछ दृश्य पेड़ के नीचे तो



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कुछ एक बंद कमरे में कुर्सी-मेज की स्थिति में हैं।

पात्रों की संख्या अधिक है परंतु इसमें से अधिकांश पात्र सिर्फ सूचित हैं। वे नाटक में प्रत्यक्ष रूप से आस्थित नहीं हैं। गीतों की संख्या काफी अधिक है।

तुलनात्मक रूप से, स्कंदगुप्त का मंचन कठिन है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा उसमें आस्थित युद्ध आदि की स्थितियाँ ऐसी हैं जिनका मंचन कठिन है। 'सैनिकों का नदी की बाढ़ में बह जाना' इस दृश्य का मंचन तो विशेष रूप से कठिन है।

गीतों की प्रचुर मात्रा है यद्यपि यह भारत दुर्दशा से कम है।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) शिल्प की दृष्टि से 'कुटज' निबंध का विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कुटज' आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित एक ललित निबंध है जिसमें ललित निबंध ~~की~~ के समस्त लक्षण उपस्थित है।

ललित निबंधों ~~की~~ कि एक विशेषता यह होती है कि लेखक उसमें अपने व्यक्तिगत जीवन का प्रक्षेपण करता है। 'कुटज' में भी आ० द्विवेदी नें यही किया है।

'कुटज' एक पौधा होता है जो बहुत ही विषम परिस्थितियों में उगता है। यह उसकी जिजीविषा का परिचायक है। आ० द्विवेदी का जीवन भी ऐसा ही था। समीक्षा के क्षेत्र में उन्हें शुरुआत में वह स्थान नहीं मिल पा रहा था जिसके के


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हकदार है। इसी क्रम में वे अव्यक्त रूप से कुटज से अपनी तुलना करते हैं और यह स्पष्ट करते हैं कि उनकी जिजीविषा भी 'कुटज' जैसी ही है।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी साहित्य परंपरा अनेक मामलों में पाश्चात्य परंपरा से प्रेरणा ग्रहण करती रही है। नाटकों के संदर्भों में भी ऐसा ही था। मोहन राकेश इसी परिपाटी को तोड़ते हुए हिंदी नाटक के लिए एक मौलिक रंगमंच स्थापित करना चाहते थे।

मोहन राकेश के ऐसा सोचने के पीछे कई तर्क थे - जैसे - पाश्चात्य नाटक के मंचन में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ जुड़ती थी जो अधिक धन की अलभ्यता के बिना संभव नहीं थी। इसरा, दोनों देशों के समाज आदि में काफी भिन्नता थी तथा 'नाटक' का प्रयोजन' इस बात को लेकर भी कुछ भिन्नताएँ थी।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही मोहन राकेश ने हिंदी नाटक के लिए 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से मौलिक रंगमंच की कल्पना की।

'आषाढ़ का एक दिन' का मंचन बहुत ही सरल है। इसके लिए एक छोटे से स्थान के अतिरिक्त कुछ बहुत सामान्य किस्म के पर्दों की जरूरत है। पात्रों के वेश-भूषा के स्तर पर भी इसमें कोई अधिक कठिनाई नहीं है।

अलग-2 खण्डों के लिए बार-2 पर्दा गिराने और उठाने की अधिक आवश्यकता नहीं है। मंच सज्जा बेहद सरल है। ऐसा प्रतीत होता है कि मोहन राकेश ने नाटक लिखते समय निर्देशक की


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सहजता को विशेष महत्व दिया है।

मोहन राकेश से पहले भारतेंदु हरिश्चंद्र नें 'भारत दुर्दशा' और 'अंधेर नगरी' जैसे नाटकों के माध्यम से तथा उनके बाद, जयशंकर प्रसाद नें 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त' और 'ध्रुवस्वामिनी' जैसे नाटकों के माध्यम से हिंदी नाटक में एक मौलिकता प्रदान करने की कोशिश की थी।

परंतु, भारतेंदु जहाँ पारसी 'लटकें-झटकें' से मुक्त नहीं हो पाए तथा नाटकों में संवाद कम गीत अधिक लिख दिए। वहीं, जयशंकर प्रसाद ~~प्रसाद~~ यद्यपि गीतों की संख्या कम करने में अवश्य सफल ~~हुए~~ रहे पर नाटक ऐसा लिखा कि उसका मंचन अत्यंत कठिन है। जयशंकर प्रसाद के नाटक



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मंचन के लिए नहीं सिर्फ ~~[illegible]~~ पठन-पाठन के लिए उपयुक्त हैं।
मोहन राकेश ने ~~[illegible]~~ उपरोक्त दोनो कमियों को दूर करते हुए हिंदी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित किया — जो कि पूर्णतः मौलिक है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग हुआ है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद को ~~स्थूल~~ मनोविज्ञान की अच्छी समझ है। परंतु यह मनोविज्ञान सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित नहीं है। यह स्थूल मनोविज्ञान है जो कि किसी व्यक्ति विशेष पर आधारित न होकर वर्ग विशेष पर आधारित है।

प्रेमचंद का मनोविज्ञान अज्ञेय या इलाचंद्र जोशी जैसा नहीं है। कहानियों के स्तर पर प्रेमचंद ने किसी एक वर्ग की बात न करके अनेक वर्गों की समस्याओं को छुआ है और हर समस्या के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को उकेरा है।

किसानों कि समस्या प्रेमचंद के हृदय के अत्यंत निकट है। 'गोदान' उपन्यास हो या 'पूस की रात' कहानी कहानी, दोनो में ही यह बखूबी दिखाई देता है।



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

'ईदगाह' के माध्यम से प्रेमचंद ने बाल मनोविज्ञान को खूबसूरती से प्रस्तुत किया है। अभावों के चलते एक छोटा सा बालक उन जिम्मेदारियों को उठाने के लिए विवश होता है, जिसके लिए उसकी उम्र बहुत बही कम है।

दलित समस्या हो या भूख की समस्या, दोनों को 'कफन' के माध्यम से प्रेमचंद नें प्रस्तुत किया है। 'ठाकुर का कुँआ' आदि ऐसी अन्य ~~व्यक्ति~~ कहानियों के माध्यम से भी दलित समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

प्रेमचंद को वृद्ध-मनोविज्ञान की भी अच्छी समझ है। 'बूढ़ी-काकी' कहानी इसी बात की बानगी प्रस्तुत करती है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wri anything in this s


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

महिलाओं कि स्थिति, बेमेल विवाह, आदि ~~कहानियों के मा~~ स्थितियों से संबंधित महिलाओं का मनोविज्ञान आदि का चित्रण भी प्रेमचंद की कहानियों में उपलब्ध होता है।

परिवार के भीतर उत्पन्न होने वाली कलह और उसके पीछे निहित मनोविज्ञान को प्रेमचंद ने 'अलग्योझा' जैसी कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

यदि संपूर्णता में विश्लेषण करें तो यह कहा जा सकता है कि प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान के विविध स्वरूप सुंदरता के साथ प्रस्तुत हुए हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'शुक्लजी गंभीर प्रकृति के मननशील व्यक्ति थे किन्तु निबंधों में स्थान-स्थान पर हास्य, व्यंग्य तथा विनोद की चुटकियाँ लेकर विषय को रंजक बनाया है।' विवेचन कीजिए। 15

शुक्ल जी मूलतः गंभीर विचारक हैं तथा शब्दों का थोड़ा सा भी अपव्यय नहीं करते हैं। उनका संपूर्ण लेखन कर्म इस बात से संचालित होता है कि - : वाक्यों में शब्द इस तरह से प्रयोग किए जाएँ कि हर शब्द में विचार ठूँस-ठूँस कर आएँ,

ऐसे व्यक्ति से यह आशा करना कि वे निबंधों में हास्य उपलब्ध कराएँगे - थोड़ा सा विचित्र प्रतीत होता है। परंतु, ध्यातव्य है कि आ. शुक्ल सिर्फ गंभीर विचारों के माध्यम से आतंक नहीं पैदा करना चाहते हैं। वे विचारों की गंभीरता के माध्यम से मनुष्य के हृदय-पटल में परिवर्तन करना चाहते हैं।

इसके लिए आवश्यक हो जाता है पाठक निबंध पढ़ते समय ऊब न जाए और थकान न महसूस


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करने लगे। इस स्थिति के निदान हेतु ही आ. शुक्ल ने निबंधों में बीच-2 में हास्य प्रसंगों को भी उपलब्ध कराया है।

यह हास्य प्रसंग ऐसे नहीं हैं कि मूल विषय पर हावी हो जाएँ या इनकी उपस्थिति से मूल विषय ही गौण मालूम पड़ने लगे। इनकी उपस्थिति बस यह सुनिश्चित करने के लिए है कि पाठक के मस्तिष्क को थोड़ी सी राहत बीच-बीच में मिलती रहे; और वह इतना बोर न हो जाए कि पुस्तक बंद करके रख दे या पृष्ठ पलट दे।

इसी प्रकार का एक उदाहरण आ. शुक्ल के 'श्रद्धा-भक्ति' नामक निबंध से देखा जा सकता है। श्रद्धा-भक्ति एक बेहद गंभीर किस्म


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

का निबंध है जो पाठक के विचारों के एक के बाद दूसरे और फिर तीसरे परत तक पहुँचती है। परंतु, इस निबंध में भी आ. शुक्ल ने 'चार अंगुर मुँह' का एक संदर्भ देकर हास्य उत्पन्न किया है। परंतु यह बहुत थोड़ा सा ही है, सिर्फ उतना जितना कि आवश्यक है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation